टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)

गद्य गुंजन

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित गद्य का संकलन

प्रवेशांक । जनवरी-मार्च । त्रैमासिक पत्रिका । 2025-2026

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)
द्वारा निर्गत ई-पत्रिका

"कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि वह एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

-प्रेमचंद

वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

शुभकामना संदेश

"गद्यगुंजन" ई-पत्रिका का यह अभिनव प्रयास न केवल बिहार राज्य की शिक्षकीय प्रतिभा का दर्पण है, बल्कि यह नवाचार, सृजनशीलता एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में एक अद्वितीय और प्रेरणास्पद पहल है। शिक्षकों की लेखनी से सजी गद्य कहानियाँ निःसंदेह शिक्षा-जगत को नई दृष्टि, नई ऊर्जा और नई सोच प्रदान करेंगी। "गद्यगुंजन" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि यह उस परिवर्तनशील सोच का प्रतीक है, जहाँ शिक्षा सीमित दायरे से निकलकर सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति के अनंत आकाश की ओर अग्रसर है।

यह ई-पत्रिका न केवल शिक्षकों की रचनात्मक शक्ति का मंच है, अपितु बिहार की बौद्धिक विरासत और साहित्यिक परंपरा को नई ऊँचाइयाँ देने की दिशा में एक स्वर्णिम कदम है।

समस्त सम्पादकीय टीम एवं सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट एवं नवीन प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। विश्वास है कि "गद्यगुंजन" आने वाले समय में शिक्षा-जगत में नवाचार, गुणवत्ता और प्रेरणा का अमिट स्तम्भ बनकर स्थापित होगा।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकार, पटना

संपादकीय

गद्यगुंजन— शिक्षा की भूमि पर सृजन के बीज बोता एक स्वप्न, विचारों से अनुभवों तक, सिद्धांत से कक्षाओं तक का प्रेरक सफ़र। बिहार की पावन माटी सदा से लोकसाहित्य, संस्कृति और यथार्थ की जीवित परंपरा रही है। इसी विरासत से जुड़ी गद्यगुंजन ई-पत्रिका, शब्दों की वह गूंज है, जिसमें शिक्षक न केवल शिल्पी हैं, बल्कि समाज के सजग द्रष्टा, संस्कृति के संवाहक और नवाचार के अग्रदूत भी हैं। यह कोई साधारण पत्रिका नहीं — यह एक विचार-आन्दोलन है। एक ऐसा मंच, जहाँ गद्य कहानियों के माध्यम से जीवन की धड़कनें, समाज की संवेदनाएँ और शिक्षा की बदलती धारा एकसाथ प्रवाहित होती हैं।

यह प्रयास सिद्ध करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रह सकती। वह तब सजीव बनती है जब शिक्षक अपने अनुभवों की रोशनी से कक्षा को आलोकित करते हैं। "गद्यगुंजन" उसी सफर की शुरुआत है — सिद्धांत से कक्षाओं तक का सफर — विचारों से व्यवहार तक की यात्रा। यह अंक गद्य कहानियों की गहराई, लोकसाहित्य की मिठास, संस्कृति की गरिमा और यथार्थ की सहजता से समृद्ध है। लेकिन यह केवल शुरुआत है। हम आश्वस्त हैं कि गद्यगुंजन की यह सृजनयात्रा निरंतर विस्तृत होती रहेगी।

आगे हम गद्य की अनेक विधाओं — संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रावृत्तांत, साक्षात्कार, पत्र-शैली, निबंध आदि को भी समेटते हुए इस पत्रिका को एक ऐसा मंच बनाएंगे, जहाँ शिक्षकों की लेखनी के सभी रंग, सभी रूप और सभी ध्वनियाँ गूंजेंगी। गद्यगुंजन एक पहल है — विचारों के विस्तार की, नवाचार की, गुणवत्ता की, संस्कृति की गरिमा की और यथार्थ की सच्चाई की। सम्पादकीय टीम की ओर से हम उन सभी रचनाकारों, शिक्षकों एवं सहयोगियों को कोटिशः धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकट करते हैं, जिनके शब्दों ने इस स्वप्न को आकार दिया। सृजन की यह यात्रा यूँ ही अनवरत चलती रहे — यही कामना है।

आस्था दीपाली
शिक्षिका (9-10)
राजकीयकृत उच्च माध्यमिक (+2) विद्यालय, कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर

~ गद्य गुंजन ~

प्रवेशांक । त्रैमासिक पत्रिका । 2025-2026

प्रधान संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुल्तानगंज, भागलपुर

संपादक एवं डिज़ाइन

आस्था दीपाली
रा॰ कृत उ॰ मा॰ (+2)
विद्यालय, कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर

विशेष सहयोग

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा॰ उ॰ मा॰ विद्यालय, दूदहन,
रघुनाथपुर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय,
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

महत्वपूर्ण

- गद्य गुंजन त्रैमासिक पत्रिका है जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इस संग्रह में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कहानियाँ संकलित है।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- इसमें प्रकाशित कहानियाँ 'टीचर्स ऑफ़ बिहार' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।
- इसमें प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/ रचनाकारों के निजी है।

इस अंक में...

1. ज्ञान की सच्ची पहचान - सुरेश कुमार गौरव 4
(उ. मा. विद्यालय रसलपुर, फतुहा, पटना)

2. जोगीरा सा.. रा.. रा.. रा - अरविंद कुमार 5
(मध्य विद्यालय रघुनाथपुर गोठ, अररिया)

3. उदारता - अमरनाथ त्रिवेदी 8
(उत्क्रमित उ० विद्यालय, बैंगर, बंदरा, मुज़फ़्फ़रपुर)

4. तितली की उड़ान - स्नेहलता द्विवेदी "आर्या" 11
(उत्क्रमित कन्या म० विद्यालय, शरीफगंज, कटिहार)

5. वायरल होने की ललक - रुचिका 14
(रा० उ० मा० विद्यालय, तेनुआ, गुठनी, सीवान)

6. आज़ादी छोटू की - लवली कुमारी 17
(उत्क्रमित मध्य विद्यालय, अनूपनगर , बरसोई, कटिहार)

7. अमृता की पेंटिंग - अदिति भूषण 19
(उ० मा० वि० आलमपुर कोदरिया विभूतिपुर, समस्तीपुर)

8. एक चक्कर में योग की समझ - धीरज कुमार 21
(उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा, भभुआ , कैमूर)

9. स्वभाव - मुकेश कुमार मृदुल 23
(उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिघरा, पूसा, समस्तीपुर)

10. पुरस्कार के हक़दार - संजीव प्रियदर्शी 25
(फिलिप उच्च विद्यालय, बरियारपुर, मुंगेर)

11. लाल सपना - चाँदनी समर 26
(मध्य विद्यालय, दाऊद छपरा, मीनापुर, मुज़फ़्फ़रपुर)

ज्ञान की सच्ची पहचान 1

सुरेश कुमार गौरव । प्रधानाध्यापक । उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना

गाँव के एक सरकारी विद्यालय में रमेश नाम के शिक्षक, अन्य शिक्षकों की तरह पढ़ाते थे। उसकी सादगी, लगन और शिक्षण शैली के कारण बच्चे उसे बहुत पसंद करते थे। लेकिन विद्यालय के कुछ सहकर्मी उसकी विधियों को व्यर्थ समझते और कहते, "रमेश जी, इतना परिश्रम करने से क्या लाभ? बच्चे तो अंत में वही रटकर परीक्षा में पास होंगे!"

शिक्षक मुस्कुरा देते और कहते, "शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि जीवन में ज्ञान का उपयोग करना है।"

एक दिन गाँव में एक बड़ा मेला लगा। वहाँ बहुत सारे खेल और प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। मेले में एक बूढ़ा व्यापारी एक अनोखी प्रतियोगिता लेकर आया। उसने कहा, "जो भी इस पहेली को हल करेगा, उसे मैं इनाम दूँगा!" उसने एक जटिल गणितीय प्रश्न रखा, जिसे सुलझाने में बड़े-बड़े विद्वान भी असमर्थ दिखे।

तभी रमेश के विद्यालय के एक छात्र, छोटू, ने हाथ उठाया और धीरे-धीरे अपनी कॉपी में हल कर दिखाया। बूढ़ा व्यापारी चकित रह गया और बोला, "तुमने यह हल कहाँ सीखा?"

छोटू ने गर्व से कहा, "मेरे गुरुजी ने हमें ज्ञान को समझकर सीखने की प्रेरणा दी है।"

रमेश दूर खड़ा यह सब देख रहा था। उसके सहकर्मी, जो उसकी शिक्षण पद्धति पर संदेह करते थे, अब शर्मिंदा महसूस कर रहे थे। उन्होंने स्वीकार किया कि शिक्षा केवल रटने का नहीं, बल्कि समझने और व्यवहार में लाने का विषय है।

शिक्षा: ज्ञान की सच्ची पहचान परीक्षा के अंक नहीं, बल्कि जीवन में उसका प्रयोग करने की क्षमता है।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

जोगीरा सा...रा..रा..रा | 2

अरविंद कुमार । शिक्षक । म.वि.रघुनाथपुर गोठ, अररिया

कार्यालय में होली की छुट्टी हुई तो मन बिजली की रफ्तार से गांव पहुंच गया । फिर याद आने लगे गांव की पगडंडी, खेत- खलिहान, गर्दन ऊंचा कर चारों तरफ निहारता बूढ़ा बरगद, सिम्मर के फूल, मक्के की मूंछे निकली हुई बालिया, मंजरते आम की खुशबू, सलहेश बाबा का गहवर और काली स्थान। इन दिनों बसंती हवा की अंगड़ाई से फिजां में एक अजीब सी मादकता फैली हुई है। पुराने पत्ते वृक्ष से अलग होकर आंसू बहाते है तो नये कोंपल पेड़ की शाखाओं से लगकर मंद-मंद मुस्कुराते है। एक समय था जब 15-20 रोज पहले से ही गाँव में होली का असर दिखने लगता था । टोले का कौन होली खेलने ससुराल जाएगा और कौन सा मेहमान गांव आएंगे, इसकी चर्चा कई दिन पहले से ही शुरू हो जाती थी। कैलाश काका एकाध सप्ताह पहले से ही फगुआ गीत गाना शुरू कर देते थे। टोले में फगुआ की तैयारी के लिए एक निर्धारित दरवाजे पर पूरी बस्ती का जमावड़ा होता था। फिर शुरू होता था जोगिरा का दौर, गांव की महिलाएं घुंघट तले मुस्कुराती डेरहिया से ही होली की तैयारी का लुत्फ उठाती थी। गरीबी ,दुख-तकलीफ भी ढोलक की थाप पर नाचने लगते थे। होली के दिन दस बजते-बजते गाँव के तकरीबन सभी नालियों की उड़ाही हो जाती थी। होली का हुड़दंग बूढ़े को भी जवान बना देता था। घूंघट के भीतर से हंसती हुई भाभीयां जब देवर की टोली पर खोखले बांस की पिचकारी से रंग डालती तो पूरा वातावरण और रंगीन हो जाता था। दादी, काकी, दादा के हाथों मिले पुआ का स्वाद का जबाब नही था। नहाने-धोने के बाद बड़ों के पैर पर अबीर रखकर उनसे आशीर्वाद लेना। बराबर वालों के मुँह में अबीर लगाकर गले मिलना। चेहरे, पैर और बालों में लगा अबीर होली के दिन दो लोगों के बीच हर दूरी को समाप्त कर देता था। संध्या की बेला में फगुआ गाने वाला दल ढोल, झाल...

जोगीरा सा..रा..रा..रा | 2

अरविंद कुमार । शिक्षक । म.वि.रघुनाथपुर गोठ, अररिया

मंजीरे के साथ घर -घर घुमते और गाते–

"एक..दिस. खेले.. कुंमर..
कनहैया.. एक.. दिस. राधा..
होरी.. होर....होरी.. होर.. हो
होरी.. होर..."

टोले से गुजरते भरगामा वाला महावीर चौकिदार को जब होली के गीत सुन बर्दाश्त नही होता तो साइकिल पटक कर कुद पड़ते होलेया वाला दल में और सब को पछाड़कर जोर -जोर से जोगिरा गाने लगते-

"अरे..सा.रा..रा..रा..सारा..रारा..
नाचो..जानी.. जोरम..जोर......
नही..तो..लगेगा..सरकारी..रोल..
सारा..रारा..."

महावीर के ताल पर फूलकहा वाली की साड़ी पहनकर जानी बनी बिनदेशरी जार-बेजार नाचने लगता था। हर दरवाजे पर होली गानेवाले दल का रंग और गुलाल से स्वागत होता था। फिर बच्चे, बूढ़े और नौजवान सब बिना किसी भेदभाव के रंग-गुलाल के रंगीनियत में सराबोर हो जाते थे। ढोल, झाल, मंजीरा की आवाज का जादू बुढ़ी हड्डियों में भी जान डाल देती थी। देर रात तक गानों का यह सिलसिला जारी रहता। कैलाश काका और महावीर चौकीदारी अब इस दुनिया में नहीं रहे मगर उनका जोगीरा आज भी जिंदा है। होलिका जलाने के दिन पूरे गाँव का उत्साह देखते ही बनता था। काली स्थान के पास होलिका जलाई जाती। बड़े लोग गीत गाते और बच्चे उत्साह से जलाते आग में तीसी के पौधे व लहसून सेंककर घर लाया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि ये चीजे अपशगुन, नजर-गुजर से परिवार की रक्षा करेगी। पहले की होली सिर्फ रंगो का खेल नही बल्कि सामाजिक उत्सव था। अमीर-गरीब, ऊंच-नीच का कोई बंधन नहीं सब मिलकर होली मनाते थे। आज आधुनिकता व शहरीकरण के इस दौर में हमारी होली जैसी परंपरा के सामाजिक स्वरूप में काफी गिरावट आई है, नशा, डीजे व अश्लील गानों की भेंट चढ़ता हुडदंग...

जोगीरा सा...रा..रा..रा | 2

अरविंद कुमार । शिक्षक । म.वि.रघुनाथपुर गोठ, अररिया

वाली होली सामाजिक एकजुटता वाली होली से दूर होती जा रही है जो हमारे लिए चिंता का विषय है। बगल से होकर गुजरती गाड़ी की हार्न ने मेरी तंद्रा भंग की, मेरी यादों की होली वर्तमान होली से कही ज्यादा रंगीन था ।

इस कहानी को वेबसाइट
पर पढ़ने के लिए
QR कोड स्कैन करें

उदारता | 3

अमरनाथ त्रिवेदी । पूर्व प्रधानाध्यापक । उत्क्रमित उ० विद्यालय बैंगरा, बंदरा, मुज़फ़्फ़रपुर

एक गाँव में दो सहोदर भाई थे। एक का नाम अमित और दूसरे का सुमित था। दोनों के बीच अच्छे रिश्ते थे। शादी के पहले आपसी संबंधों में इतनी प्रगाढ़ता थी कि जब किन्हीं दो भाईयों में झगड़ा होता तो गाँव के लोग इन्हीं दो भाईयों के नज़ीर पेश करते। वास्तव में प्रेम में यदि अंतरंगता हो तो किसी से छिपाए नहीं छिपती। पिता रवि का साया तो इन दो भाइयों से बचपन में ही छिन गया था परन्तु माँ सुनीति का स्नेह अविरल रुप से इन दो भाइयों पर था। अमित पढ़ने-लिखने में कोई खास न था परन्तु उसकी समझ और उदारता अव्वल दर्जे की थी। वह शादी के योग्य हो चुका था। लड़की वाले आते तो देखते ही अमित को पसंद कर लेते, परंतु माँ सुनीति को यह दिल में लालसा थी कि उसकी पतोहू सुंदर और सुशील हो। सब कुछ देखते हुए सुनीति ने माया नाम की लड़की से बेटे अमित की शादी कराना सुनिश्चित किया। तय तिथि को बारात गई और शादी संपन्न हो गई। माया जब पहली बार ससुराल आई तब उसके हाव-भाव बड़े अच्छे थे परंतु ज्यों-ज्यों समय बढ़ता गया न जाने माया के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा। सास सुनीति यह देख आश्चर्य करती परन्तु कोई दूसरी चीज तो न थी जिसे बदला जा सके। समय के साथ सुमित की भी शादी अच्छी लड़की से संपन्न हुई। सुनीति तब तक बूढ़ी हो चुकी थी। अब उसका अपने घर पर से अधिकार लगभग समाप्त हो चुका था। उसके जीवन के सत्तर वसंत पार हो चुके थे। इधर सुमित की पत्नी आशा का स्वभाव तो अच्छा था परन्तु वह अपनी जेठानी के स्वभाव से क्षुब्ध रहा करती थी। अब भाइयों में सामंजस्य तो था परन्तु जेठानी और देवरानी में छत्तीस का आँकड़ा था। विभाजन की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी केवल कार्यान्वित करने की बात थी। माँ सुनीति के गुजरने के बाद विभाजन को रोक पाना और भी असंभव जान पड़ता था। एकदिन जेठानी और देवरानी के बीच...

उदारता | 3

अमरनाथ त्रिवेदी । पूर्व प्रधानाध्यापक । उत्क्रमित उ० विद्यालय बैंगरा, बंदरा, मुज़फ़्फ़रपुर

तीखी झड़प हुई। अमित और सुमित ने फैसला किया कि अब अलग होने में ही कल्याण निहित है।विभाजन के कुछ ही दिन बाद सुमित एक सड़क दुर्घटना में पड़ गया। इस कारण दाएँ हाथ की तीन उंगलियाँ उसे गवाँनी पड़ी। शरीर के अन्य जगह भी चोटें लगी थीं। दवा लंबी चली तब जाकर उसे दर्द से निजात मिली परन्तु हाथ की उंगलियाँ तो फिर से जुड़ नहीं सकती थीं सो उसके काम में बाधा आने लगी। धीरे-धीरे सुमित कर्ज के बोझ से दबने लगा। बाल बच्चे भी अभी उस लायक न थे कि कहीं से कुछ कमा कर भी ला पाएँ।आशा परिश्रम करती परन्तु अमित जैसा खेतों में पैदावार न हो पाता। दोनों भाई के खलिहान एक जगह ही हुआ करते। जहाँ अमित का खलिहान अन्न से भरा रहता वहीं सुमित के खलिहान में आधे से भी कम अन्न उपजते। अमित खेती में सभी उन्नत तरीके अपनाता, जबकि सुमित रुपए के अभाव में ऐसा न कर पाता। कभी कभार अमित को जब दया आती तो चुपके से अपने छोटे भाई को कुछ रुपए दिया करता।एक दिन चाँदनी रात में अमित ने अपनी पत्नी और बेटे की नज़र से बचकर मक्के के अपने ढेर से अपने भाई के मक्के के ढेर में मक्का रखने लगा। संयोगवश सुमित आज सवेरे भोजन कर खलिहान के पास पहुँचा ही था कि उसे कुछ आवाज सुनाई दी। वह छिपकर बड़े भाई को अपने अन्न के ढेर से उसके अन्न के ढेर में अन्न रखते देख लिया। पहले तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही न हुआ परन्तु जब सामने आया तब सारी बातें उसे समझ में आ गई। वह तुरंत अपने भाई के चरणों में गिर पड़ा। अमित ने उसे उठाते हुए बोला, भाई! तुम्हारी गरीबी देखी नहीं जाती इसीलिए मैं कुछ सहायता करना चाहता हूँ परंतु मैं तुम्हारी खुलेआम मदद नहीं कर सकता जिस कारण मैं यह तरीका अपनाकर तेरी सहायता करना चाहता हूँ और कोई बात नहीं सुमित। अपने बड़े भाई की बात पर सुमित के नेत्रों से...

उदारता | 3

अमरनाथ त्रिवेदी । पूर्व प्रधानाध्यापक । उत्क्रमित उ० विद्यालय बैंगरा, बंदरा, मुज़फ़्फ़रपुर

आँसू गिरने लगे। ये आँसू गर्म थे जो रिश्ते में एक बार पुनः गर्माहट लाने को बेचैन थे। सच में बड़े भाई की उदारता ने आज सुमित को धन्य कर दिया था।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

तितली की उड़ान | 4

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या' । शिक्षिका । उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज, कटिहार

मुहल्ले के एक चौराहे पर केशव तन्मयता से जूता-चप्पल मरम्मत करता था। जूता पॉलिश करता था। उसे अपने इस काम से शिकायत नहीं थी लेकिन बड़ी मुश्किल से गुजर-बसर कर पाता था। केशव के दो बच्चे- तितली और किशन। पत्नी घरेलू महिला थी, लेकिन सुलझी हुई। सरल गृहिणी। इतनी कम आमदनी में भी उफ्फ नहीं। झोपड़े में अपने बच्चों को दो जून की रोटी बनाकर खिलाती लेकिन मन भारी रहता आर्थिक तंगी से फटेहाल जिंदगी से तंग -तबाह! वो तो लाल कार्ड का धन्यवाद करती की बच्चों को भरपेट भोजन मिल जाता। केशव पूरी लगन से मेहनत करता लेकिन सामान्य जरूरतों को भी पूरा कर पाना उसके बस में नहीं था। तितली बड़ी बेटी थी। लेकिन चेहरे पर अद्भुत चमक लिए खुश रहती। माँ के साथ हाथ बटाती और तन्मयता से पढ़ती। स्कूल से किताबें भी मिल जातीं थीं और पड़ोस के श्रीधर पाण्डे , जो बैंक अधिकारी थे, आवश्यक कॉपी, कलम, कागज मुहैया करवा देते थे बदले में केशव उनके चप्पल जूतों की मरम्मत कर देता था, पैसा कभी लेता कभी नहीं भी लेता, लेकिन काम में हमेशा तत्पर!

किशन खेल कूद में अव्वल! फुटबाल का अद्भुत प्रतिभावान खिलाड़ी। पढ़ने में सामान्य। तितली से दो वर्ष छोटा। वो बड़ा होकर मडोना जैसा बनना चाहता था। केशव उसे जूता से दूर रखकर साहब बनाना चाहता था। माँ शक्ति जिसे सतिया कहकर केशव फुले नहीं समाता था, का लाडला। शक्ति के लिए किशना सबसे दुलारा और सुंदर था।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। तितली बड़ी हो रही थी। वह मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास कर गई। केशव के मुहल्ले में यह पहली घटना थी। इसके पहले किसी ने मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास नहीं किया था। केशव बहुत प्रसन्न था। मिठाई की दुकान से लड्डू लेकर घर पहुँचा। तितली को देख आँखें डबडबा गईं।

तितली कॉलेज जाने लगी।...

तितली की उड़ान | 4

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या' । शिक्षिका । उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज, कटिहार

पढ़ने में अव्वल, शालीन और सुशील।

केशव उहापोह में था। आस-पास जात बिरादरी के लोग कहने लगे। बेटी बड़ी हो गई, समय से शादी करवा दो। आखिर केशव नें सतिया अपनी पत्नी से चर्चा की।

"क्या करना चाहिये? तितली बड़ी हो गई। ई उम्र में तो तितली की अम्मा बन गईं थी।"

"उ जमाना कुछ और रहे। हम सब अनपढ़ गँवार, हमार बिटिया त कॉलेज जा रहल बाड़ी।"

हूँ! केशव ने हामी भरी, तो?–

"ई की शादी ब्याह से पढ़ाई छूट न जाई का?"

"हूँ...अच्छा! तो अभी छोड़ दिया जाय। केशव गंभीर होकर बोला।"

तितली पानी लेकर आई।

"बापू! हमारा बी.ए कम्पलीट हो जाये,अभी फाइनल ईयर है। आप कहो तो ऑफिसर वाला फार्म भर दें क्या?"

केशव अचंभित!

"सतिया ई बेटी क्या कह रही है? अरे ..कितना बढ़िया बात है।.."

"अच्छा तू फार्म भरेगी तो ऑफसर बन जाओगी .."

"अरे ना बाबा, इम्तहान देना होगा।"बापू मैं खूब मेहनत करुँगी और आपके आशीर्वाद से मैं ऑफिसर जरूर बनूँगी।"

"माई, बापू को बोल ना.."

"अरे हाँ मोरी बिटिया..बापू काहे मन करीहें ..का जी ठीक बा ना।"

हाँ ..हाँ..

तितली बहुत खुश थी। वो मैगजीन के एक लाईब्रेरी से पहले ही जुड़ गई थी। कुछ बच्चों को ट्यूशन भी देती थी। इस बहाने उसने पूर्व से ही अपनी तैयारी जारी रखी थी।

केशव बहुत खुश था, लेकिन समझ नहीं पा रहा था कि बिटिया की उम्र अधिक हो गई तो बिरादरी में रिश्ता मिलेगा या नहीं। इतना पढ़ा लिखा लड़का तो दूर-दूर तक नहीं है। लेकिन केशव ऑफसर बेटी का सपना देखने लगा। उसे याद है जब तितली छोटी थी, एक मेम साहब मोटर कार से उतरकर अपनी सैंडल दुकान पर देकर...

तितली की उड़ान | 4

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या' । शिक्षिका । उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज, कटिहार

बड़ी घमंड से अनाप शनाप बोलीं फिर अपनी चमचमाती गाड़ी से छूमंतर हो गईं। तितली को यह सब अच्छा नहीं लगा। वो पूछ बैठी- "ये कौन है बापू इस तरह आपको क्यूँ बोली? कहते हुए उस सैंडल को उठाकर कचड़े में फेंक दिया था।

तितली नें रोते हुए कहा था बापू मैं भी मोटरकार लूँगी लेकिन मैं कभी ऐसा नहीं करूँगी.. केशव याद करता हुआ ..तितली के मन में बैठ गया । तितली का संकल्प अडिग था। तितली बड़ी हुई संकल्प दृढ़ होता गया।

कुछ समय बीता! तितली नें बाजी मार ली। तितली अब गंगानगर की जिलाधिकारी .. अपनी कार..अपना बंगला..

"अरे क्या बात है..रोवत हो का?" शक्ति ने धक्का देते हुए केशव की तंद्रा तोड़ी।

"अरे ना हम आज यहाँ बैठ के राजा हो गए है! याद आ रहा था अपनी तितली का बचपन। तू त बस सपने में.."

ना ना हम सोच रहे थे कि यह सब तितली के ऊँचे सपने की उड़ान है। सब तोहार तितली का।

शक्ति और केशव मुस्कराने भी लगे। तितली सामने खड़ी थी।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

वायरल होने की ललक

5

रुचिका । शिक्षिका । रा. उ. म. वि. तेनुआ, गुठनी, सीवान

दीपिका बहुत ही सुंदर थी, मृदुभाषी, पढ़ने-लिखने में अव्वल, कॉलेज में भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता इस तरह की सारी प्रतियोगिताओं में वह प्रथम स्थान प्राप्त करती थी। बिल्कुल साधारण ढंग से रहने वाली वह लड़की थी, उसे देखकर कोई कह ही नहीं सकता था कि इतनी विशेषता उसके अंदर होगी। बस अपने काम से काम रखती, न ही कोई दिखावा, न ही उच्श्रृंखलता और न ही खुद को श्रेष्ठतर साबित करने की उसकी होड़ थी।

उसकी सहेली मंजूषा जो बचपन से ही उसकी सहेली थी। स्कूल, कॉलेज, घर हर जगह उसके साथ परछाई की तरह रहती थी। कई बार दीपिका से कह चुकी थी तुम तो बेवकूफ हो यहाँ कितनी लड़कियाँ हैं जिन्हें कुछ नहीं आता पर हर जगह उनकी चर्चा होती। उनकी एक वीडियो को हजारों व्यूज मिलते। पर तुम्हें तो इन सबसे कोई मतलब ही नहीं है।

दीपिका कहती, मंजूषा यह सब मैं दूसरों को दिखाने के लिए नहीं करती बल्कि अपनी आत्म संतुष्टि के लिए क़रतीं। तुम्हें तो पता है जो भी मैं क़रतीं वह पूरी ईमानदारी और शिद्दत से क़रतीं और काम में कोई भी बेईमानी पसंद नही शायद इसीलिए मेरा भाषण हो या निबंध या वाद विवाद हर चीज को सराहा जाता। और कॉलेज में इतने लोग देखते तारीफ करते यह क्या कम है जो रिल्स बनाकर या युट्यूब पर डालकर प्रसिद्धि पाऊँ।

मंजूषा कहती ,अरे यार मैं कौन-सा कह रही कि तुम अलग से कुछ करो, जो क़रतीं बस उसे ही तो डालना है और इसी बहाने तुम्हारी प्रसिद्धि होगी तो मेरी भी थोड़ी हो जाएगी। मैं सबसे कहूँगी ये मेरी सहेली है।

दीपिका हँसने लगी, मगर वह इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। मंजूषा एकदम चुप हो गयी वह कर भी क्या सकती थी। वह कह ही सकती थी न, और करना...

वायरल होने की ललक | 5

रुचिका । शिक्षिका । रा. उ. म. वि. तेनुआ, गुठनी, सीवान

तो दीपिका को ही था।

तभी उसके कॉलेज में एक नई लड़की आई नाम था श्वेता, इंस्टाग्राम पर उसके बहुत सारे रिल्स वह देख चुकी थी और अक्सर वह देखती रहती थी। उसे वह अपने आदर्श के रूप में देखती थी और उसके रिल्स की दीपिका पूरी तरह दीवानी थी और हो भी क्यों न इतने अच्छे वह रिल्स बनाती थी कि तुरंत वायरल हो जाते हजारों लाइक्स, शेयर और फॉलोवर्स मिनटों में बन जाते थे।

दीपिका को ऐसा लगता था कि वह बहुत खास होगी, सबसे अलग, सबसे विशेष, सर्वगुण सम्पन्न।

पर आज जब श्वेता कॉलेज में एडमिशन ली तो दीपिका को उसे जानने का मौका मिला।

वह एकदम साधारण-सी लड़की थी। हर चीज में औसत दर्जे की चाहे पढ़ाई हो या संगीत। वाद-विवाद, भाषण इन सब में तो वह भाग भी नहीं ले सकती थी। मगर हाँ उसकी एक विशेषता थी कि स्वयं को ढंग से सजाकर वीडियो और रिल्स बनाना जिसके कारण वह वायरल हो जाती और उसकी प्रसिद्धि थी।

यह सब देखकर दीपिका के मन में भी स्वयं को वायरल करने की इच्छा जगी। बोलती तो वह अच्छा थी है मेकअप वगैरह में वह शून्य थी अपनी समस्या उसने मंजूषा को बताई और मंजूषा ने यह जिम्मा ले लिया। मंजूषा दीपिका को तैयार कर वीडियो बनाने में मदद करती।

शुरु-शुरु में तो एक दो लोग ही उसका वीडियो देखते। दीपिका का उत्साह ठंडा पडने लगा।

मगर फिर दोस्तों रिश्तेदारों को लिंक शेयर कर फॉलोवर्स बढ़ाए जाने लगे।

दीपिका के अंदर वायरल होने की ललक इतना बढ़ गयी कि वह सब कुछ छोड़ रिल्स, वीडियो के प्रचार पर ध्यान देने लगी। वायरल का जोश तो पूरा हो गया मगर दीपिका काफी बदल गयी। यह दीपिका पहले वाली दीपिका से बिल्कुल अलग थी।..

वायरल होने की ललक | 5

रुचिका । शिक्षिका । रा. उ. म. वि. तेनुआ, गुठनी, सीवान

अब हर छोटी बड़ी चीजों का रिल्स बनाना वीडियो बनाना उसे सोशल मीडिया पर डालना और ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए मेहनत करना उसका लक्ष्य हो गया। इस तरह बाकी चीजों पर उसका ध्यान कम हो गया।

मंजूषा की एक सहेली वायरल होने के चक्कर में दूर होती गयी, घर वालों की चहेती दीपिका बदल रही थी।

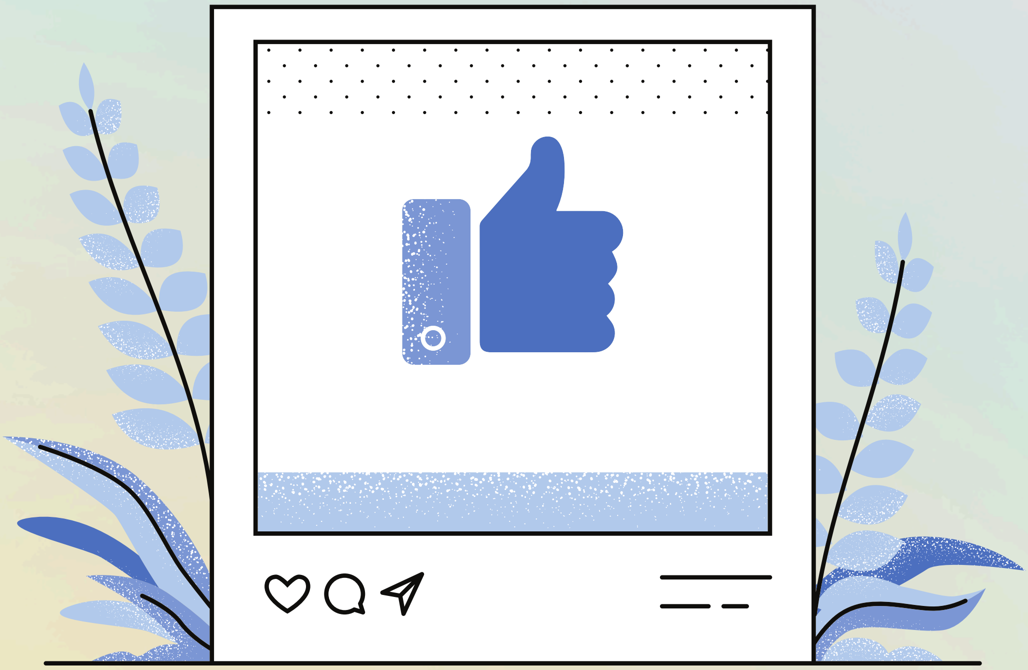

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

आज़ादी छोटू की | 6

लवली कुमारी। शिक्षिका । उत्क्रमित म० विद्यालय, अनूपनगर, बारसोई, कटिहार

भोंदू – भोंदू यह आवाज विद्यालय के बच्चों की ओर से आ रही थी , छोटू के लिए। छोटू जो एक नीचे जाति का बच्चा था, सभी उसे देखकर घृणा करते। कल के राष्ट्रीय पर्व यानि स्वतंत्रता दिवस की तैयारी में सभी बच्चे जुटे हुए थे इसलिए छोटे की भी इच्छा हो रही थी कि वह भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बने पर क्या करता नीची जाति का होने के कारण उसे कोई बच्चे पसंद ही नहीं करते। कोई उसे कुछ करना तो दूर कुछ छुने ही नहीं देता बेचारा एक कोने में पड़े –पड़े सोचता रहता कि मैं अगर नीचे जाति का हूं तो उसमें मेरी क्या गलती है। क्या मुझे हक नहीं कि मैं भी पंद्रह अगस्त में झंडा फहराऊं, अपने आज़ादी के दिन सभी के साथ खुशी से मनाऊं पर वह क्या करता? शिक्षक हमेशा बच्चों को समझाते पर कोई बच्चा सुने तब ना। छोटू पढ़ाई में बहुत तेज था इससे भी बच्चे उससे ईर्ष्या करते। स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम की सारी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई थी।

अब बच्चे अपने घर को चले गए अगले दिन वह दिन आ गया जिसकी बच्चों को बेसब्री से इंतज़ार थी ।छोटू सहित सभी बच्चे विद्यालय में झंडा लेकर उपस्थित हो गए। सभी काफी खुश नजर आ रहे थे। काफी चहल-पहल थी, पर छोटू एक कोने में खड़ा था वह अपने कागज के झंडे को बहुत ध्यान से देख रहा था कि तभी अचानक बहुत तेज की आंधी आई इतनी तेज कि बच्चे गिरने लगे, किसी- किसी को दीवार से चोट लग गई और इतने में जो झंडा था वह आंधी में उड़कर एक पेड़ पर अटक गया। तभी दौड़कर छोटू भी अपने दोस्तों को संभालने आ गया। उसे खुद भी चोट लगी थी फिर भी वह अपने दोस्तों की मदद कर था। थोड़ी देर बाद आंधी समाप्त हो गई पर झंडा तो पेड़ पर फंसा हुआ है अब झंडा कैसे फहराया जाएगा। सभी चिंता में पड़ गए, छोटू अपनी परवाह न करते हुए किसी भी तरह करके वह पेड़ पर चढ़ गया और वहां से झंडा उतार कर सम्मानपूर्वक...

आज़ादी छोटू की | 6

लवली कुमारी। शिक्षिका । उत्क्रमित म० विद्यालय, अनूपनगर, बारसोई, कटिहार

नीचे ले आया। सभी बच्चे और शिक्षकगण छोटू की तरफ देख रहे थे और उसको शाबाशी दे रहे थे वह बच्चे भी जो छोटू को देखना तक पसंद नहीं करते थे। आज वह बच्चे भी छोटू की तारीफ कर रहे थे। तो विद्यालय के प्राचार्य जी ने कहा देखा अपनी जान की परवाह किए बिना ही इस बच्चे ने हमारे भारत मां की शान तिरंगा को संभाल कर सम्मानपूर्वक के साथ नीचे उतारा और इतना ही नहीं सबों की मदद भी की। हमें गर्व है छोटू जैसे बच्चे पर, सारे बच्चों ने भी कहा बिल्कुल सही कहा सर आपने। छोटू के दोस्तों को बहुत शर्मिन्दगी महसूस हो रही थी पर तभी छोटू अपने दोस्तों से आकर लिपट गया। सभी ने मिलकर झंडोत्तोलन का कार्यक्रम किया। एक साथ झंडा गीत और राष्ट्रगान गाया। आज सचमुच छोटू की आज़ादी का दिन था क्योंकि उसे अब विधालय में पूरी स्वतंत्रता जो मिल गई थी।

शिक्षा: किसी को भी देखकर घृणा नहीं करनी चाहिए। कोई भी धर्म बड़ा नहीं होता सबसे बड़ा धर्म इंसानियत का होता है।

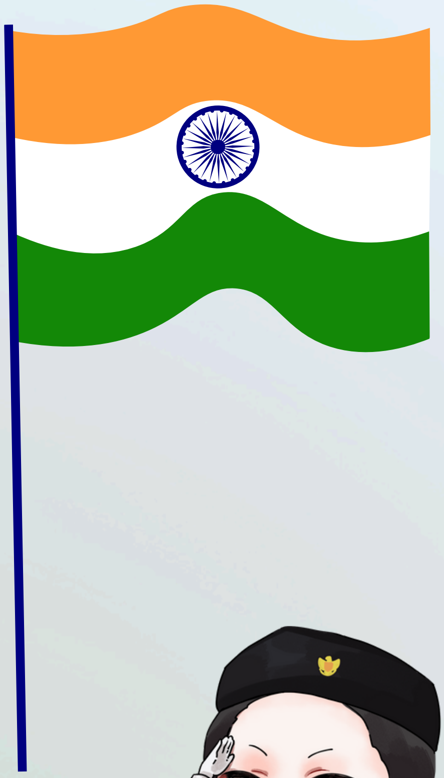

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

अमृता की पेंटिंग | 7

अदिति भूषण । शिक्षिका । उ० मा० वि० आलमपुर कोदरिया विभूतिपुर, समस्तीपुर

अमृता गाँव की सबसे होशियार और मेहनती लड़की थी। उसकी आँखों में हमेशा एक विशेष चमक रहती थी। जैसे वह कुछ बड़ा करना चाहती हो। उसके दिल में अपने देश के प्रति गहरा प्रेम था। गाँव में हर साल स्वतंत्रता दिवस के मौके पर एक प्रतियोगिता होती थी, जिसमें गाँव के बच्चे अपनी कला, संगीत और नृत्य का प्रदर्शन करते थे। अमृता को यह मौका पसंद था, क्योंकि इस अवसर पर वह अपनी भावनाओं को खूबसूरती से व्यक्त कर पाने में समर्थ थी। इस साल उसने तय किया कि वह स्वतंत्रता संग्राम की एक ऐतिहासिक घटना को पेंटिंग के माध्यम से जीवंत करेगी। उसने दिन-रात मेहनत की, अपनी पेंटिंग में स्वतंत्रता सेनानियों की मेहनत, उनकी चुनौतियाँ और उनके बलिदान को दर्शाने की कोशिश की।उसकी पेंटिंग में नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गाँधी, भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की छवियाँ थीं। उसने पेंटिंग में उस समय की कठिनाइयों और संघर्षों को खूबसूरती से उकेर दिया था। स्वतंत्रता दिवस आया, और गाँव के मेले में उसकी पेंटिंग प्रदर्शित की गई। गाँव वालों की भीड़ उमड़ पड़ीं और सभी लोग उसकी पेंटिंग को देखकर गर्व महसूस कर रहे थे। हर व्यक्ति को उसकी पेंटिंग में देशभक्ति की भावना साफ नजर आ रही थी। अमृता की पेंटिंग को देखकर, गाँव के बुजुर्गों की आँखों में आँसू थे। उन्होंने कहा, "यह पेंटिंग हमारे इतिहास और हमारे संघर्ष की एक जीवंत तस्वीर है। यह हमें याद दिलाती है कि हम जो आज हैं, वह उन वीरों की वजह से हैं जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी।" अमृता के चेहरे पर खुशी की चमक थी। उसकी मेहनत और देशभक्ति ने सबका दिल जीत लिया था। वह जानती थी कि स्वतंत्रता सिर्फ एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक स्थायी संकल्प है— अपने देश के प्रति ईमानदारी और प्यार का।...

अमृता की पेंटिंग | 7

अदिति भूषण । शिक्षिका । उ० मा० वि० आलमपुर कोदरिया विभूतिपुर, समस्तीपुर

इस घटना ने अमृता को यह सिखाया कि छोटे-छोटे प्रयास भी देश के प्रति हमारे प्यार और सम्मान को प्रकट कर सकते हैं। वह अपने देश के प्रति अपनी कृतज्ञता और समर्पण को हर दिन महसूस करती थी और उसकी पेंटिंग ने तो इस भावना को और भी गहरा कर दिया।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

एक चक्कर में योग की समझ | 8

धीरज कुमार । शिक्षक । उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा, भभुआ , कैमूर

भभुआ शहर में एक प्राथमिक विद्यालय में विकास कुमार और कृष्ण कुमार नाम के दो शिक्षक पढ़ाते थे। दोनों की उम्र लगभग समान ही थी।

कृष्ण कुमार हमेशा खुश रहते थे और हमेशा सक्रिय रूप से विद्यालय में अपना कार्य करते थे।

इधर विकास कुमार हमेशा सुस्त रहते थे। वे प्राय: मेहनत वाले कार्य से बचना चाहते थे।

एक दिन लंच टाइम में शिक्षकों के बीच वार्तालाप में विकास कुमार ने कृष्ण कुमार जी की चुटकी लेते हुए पूछ ही लिया कि सर आप तो हमेशा फ्रेश लगते है और मन लगा कर काम करते है।

इस पर कृष्ण कुमार ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि सर इसके लिए मैं जो करता हूं ना, आप वो नहीं करते है।

विकास कुमार थोड़े चिढ़ गए और बोले कौन सा काम है जो आप करते है और मैं नहीं करता हूं।

उनकी बातों को अन्य शिक्षक सुन रहे थे। तभी एक शिक्षक ने हंसते हुए कहा कि– क्यों न इसी बात पर एक गेम हो जाए? हम लोग भी देख लेते है की कौन क्या करता है और क्या नहीं करता है?

इस पर प्रतिष्ठा की बात आने पर दोनो राजी हो गए।

दूसरे शिक्षक में कहा की ज्यादा नहीं स्कूल ग्राउंड के दो चक्कर लगा कर दस बार उठक बैठक कम समय में जो कर लेगा वो विजेता होगा।

दोनों तैयार तो हो गए मगर ये क्या कृष्ण कुमार आसानी से चक्कर लगा कर जल्द से उठक बैठक भी कर लिए, इधर विकास जी का हालत खराब हो गया। वो एक चक्कर पूरा करने में ही हांफ गए। और मुझसे नहीं होगा बोलने लगे। थोड़े देर रिलेक्स के बाद उन्होने माना की कृष्ण कुमार वाकई सक्रिय है। उन्होंने पूछा की इसका क्या राज है की आप तंदुरुस्त है?

एक चक्कर में योग की समझ | 8

धीरज कुमार । शिक्षक । उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा, भभुआ , कैमूर

कृष्ण कुमार ने कहा की कुछ राज नहीं है। आप भी यदि अभी से सुबह–सुबह उठ कर टहलना और योग करना शुरु कर दे तो धीरे–धीरे आप भी सक्रिय रहेंगे और तंदुरुस्त भी रहेंगे। योग करने के एक नहीं हजार फायदे हैं। योग की महत्ता को पूरा विश्व मानता है और आप भी जानते है की 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है।

बस–बस अब मैं समझ गया। ऐसे बात रोकते हुए विकास कुमार बोले। अब से मैं भी आपके साथ सुबह टहलते हुए योग करूंगा।

आप मुझे सिखाएंगे न योग।

हां हां क्यों नहीं। ये भी पूछने की बात हैं।

फिर अगले सुबह से दोनों योग करते हुए देखे गए।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

स्वभाव | 9

मुकेश कुमार मृदुल । शिक्षक । उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिघरा, पूसा, समस्तीपुर

अपने घर के बैठकखाने में ट्यूशन पढ़ रहे सात वर्ष का लड़का पढ़ने के क्रम में रुककर बोला – "अब छुट्टी कर दीजिए सर।"
'क्यों ?' शिक्षक ने पूछा।
सर अभी मेरी मौसी आनेवाली है। वह बउआ को भी लाएगी। लड़के का चेहरा गुलाब की तरह खिल उठा। शिक्षक और लड़के के बीच हो रही इस वार्तालाप को लड़के की माँ सुन ली। वह आज अपने काम से जरा सवेरे लौट आयी थी। अपने लड़के को वह दूसरों के छोटे–छोटे बच्चों से खेलने देना कतई नहीं चाहती। पर लड़का उसकी डाँट–फटकार की परवाह किये बगैर अक्सर पड़ोस के छोटे शिशु को गोद में लेकर खेलता–खेलाता रहता। माँ लड़के को अच्छी पढ़ाई के बाद बड़ी नौकरी या बड़े व्यवसाय में देखना चाहती थी। इसके लिए उसे वह अपने हिसाब से पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने देना चाहती। शिक्षक से लड़के की छुट्टी माँगने की जिद्द से वह खीझ गई। बैठकखाने में दाखिल होते हुए बोली – "जी नहीं, आप अपने समय से इसकी छुट्टी करेंगे। देखती हूँ, आजकल पढ़ाई में इसका बिल्कुल मन नहीं लग रहा है। बदमाशी भी करता है। मुझको तो सुनता ही नहीं।"
"डाँटिये तो दुलारिये नहीं। बदमाशी करने पर हलकी चपत लगा दिया कीजिए। यह आपका भी डर मानेगा।" शिक्षक ने सलाह दी।
माँ की आखें छलछला आयीं – "मैं इसे अपने से थोड़ा भी दंडित नहीं कर सकती। इसे डाँटती भी हूँ तो अंदर से घबरा जाती हूँ । बहुत मन्नतें माँगने के बाद, ईश्वर ने मुझे इसका मुँह दिखाया है । इसके प्रसव के समय की पीड़ा याद आने पर मेरा कलेजा आज भी दहल जाता है। इसको जनने के बाद, समझिए, मैं तो मर ही चुकी थी। कितने रिश्तेदारों के खून चढाये जाने के बाद मुझे होश आया था। उसी वक्त किसी ने बताया कि मैं दुबारा माँ नहीं बन सकती। मैं चीखना चाही, तभी इसके पिता ने इसे मेरी गोद में...

मुकेश कुमार मृदुल । शिक्षक । उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिघरा, पूसा, समस्तीपुर

देकर मुझे अपने बाजुओं में थाम लिया।”
माँ आँचल से अपनी आँखें पोंछने लगी। लड़का उठकर बाहर की ओर दौड़ा। उसे अपनी मौसी के पहुँच जाने की आहट मिल गई थी। वह मौसी से झटपट शिशु को अपने गोद में लेकर चहकने – कूदने लगा।

इस कहानी को वेबसाइट
पर पढ़ने के लिए
QR कोड स्कैन करें

पुरस्कार के हक़दार

10

संजीव प्रियदर्शी । शिक्षक । फिलिप उच्च विद्यालय, बरियारपुर, मुंगेर

"गांव में जो सबसे बढ़कर धर्मनिष्ठ होगा, आज की सभा में वे ही पुरस्कार के हकदार होंगे।" ग्राम-समिति की उद्घोषणा सुनते ही रात-दिन ईश्वर नाम की माला जपने वालों के अलावा मंदिर के पुजारी बुझन भगत के मन में भी लड्डु फ़ूटने लगे। बुझन को यह पूरा विश्वास है कि उससे बढ़कर धर्मनिष्ठ गांव में दूसरा नहीं है। वह नित्य घंटों ईश पूजा के बाद गांव वालों को धर्म का ज्ञान भी बांचता रहता है।

...लेकिन ग्राम-समिति के मंच के नेपथ्य से जब पुरस्कार के लिए बुझन के नाम के साथ भैरव के नाम की भी चर्चा होने लगी तो बुझन भड़क गया, 'भैरव में कौन-सा ऐसा गुण है जो समिति वाले उसे पुरस्कृत करेंगे? पैर से दिव्यांग और अनपढ़ तो है ही, कभी वह पूजा-पाठ भी नहीं करता है। निर्णायक मंडल का फैसला मेरे ही हक में आवेगा, देख लेना भक्तों।" तभी ग्राम समिति के अध्यक्ष महोदय ने कहना प्रारंभ किया-

'भाइयों...बहनों, समिति के सदस्यों ने काफी सोच-विचार कर भैरव को इस पुरस्कार के लिए चयन किया है। इसलिए कि अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा-सुश्रूषा करने वाला गांव में इससे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है।"

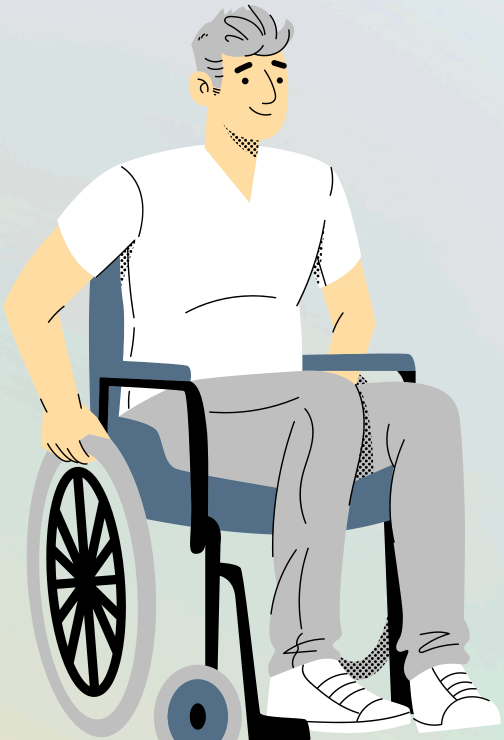

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

लाल सपना | 11

चाँदनी समर । शिक्षिका । मध्य विद्यालय, दाऊद छपरा, मीनापुर, मुज़फ़्फ़रपुर

उसकी नींद खुली तो बिस्तर पर खून के धब्बे थे। पेट में मरोड़ उठ रही थी। बड़ी मुश्किल से कराते हुए वह खड़ा हो पाया। तभी उसकी छोटी बहन तानिया आकर जोर से बोली "बाप रे इतनी देर से उठे हो चाय कौन बनाएगा? मुझे भूख लगी है।"

आशु ने करुणा भरी दृष्टि से उसे देखा और कहा

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है आज जाओ तुम खुद ही चाय बना लो।"

"तुम्हें तो रोज नहीं बहाने रहते हैं।" तान्या ने तुनक कर कहा

"मां..." और चिल्लाती हुई मां के पास पहुंची।

थोड़ी देर जब वह सैनिटरी पैड लेकर बाथरुम जाने को निकला तान्या मां के साथ आ खड़ी हुई

"क्या हुआ? मैं खाने की तैयारी में लगी हूं । तुम थोड़ा चाय चढ़ा दो। तानिया को भी भूख लगी है ।

मां ने आते-आते कहा। "मां मैं वह ..." उसने सेनेटरी पैड की तरफ देखते हुए कहा ओह! अच्छा चलो तान्या मैं ही बना देती हूं चाय।

मां तान्या को लेकर रसोई की तरफ़ बढ़ी तो तान्या ने मुंह फूला लिया।

दोपहर को आशु बिस्तर पर लेटा है जब तान्या आ धमकती है। भाई मुझे खाना दो।

"जाओ मां से मांग लो.. मेरे पेट में दर्द हो रहा है।" आशु ने लेटे लेटे कहा।

"तुम्हें तो रोज कुछ ना कुछ होता ही रहता है। मां घर पर नहीं है कहीं गई है।"

"हां तो तुम खुद ले लो ना। "

"तुम निकाल दो मुझे मैं नहीं जाऊंगा।"

आशु उठकर किचन की तरफ़ कराहते हुए बढ़ा।

शाम को आशु अपने कमरे में बैठा है जब फिर तानिया आकर कहती है

"मां ने कहा है छत से कपड़े ले आओ और आयरन करके सबको अपनी जगह पर रख दो।"

"तुम्हें कितनी बार बताया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं। तुम जाकर ले आओ ना।" आंसू ने पेट पकड़ते हुए कहा।...

चाँदनी समर । शिक्षिका । मध्य विद्यालय, मीनापु, मुज़फ़्फ़रपुर

"नहीं, मैं खेलने जा रही हूं । तुम ले आओ। मेरे दोस्त मुझे बुला रहे हैं। कहते हुए तानिया तेजी से बाहर निकल गई। यह धीरे छत की सीढ़ियां चढ़ता है।

अगली सुबह आशु बाथरूम से निकलकर मुंह हाथ धो रहा है जब मां कहती है "तानिया के कमरे में अच्छे से झाड़ू लगा देना बेटा बहुत गंदा हो गया है।"

"मां, मेरे पैर में दर्द हो रहा है मेरा मन नहीं कर रहा। उसे कहो ना खुद कर ले।

"ओह हो! मैं भी उसी हालत में काम करती हूं कि नहीं। तुम्हें भी आदत डाल लेनी चाहिए। आख़िर काम तो हमें ही करने हैं।"

"क्यों, हमें ही क्यूं करने हैं? तान्या और पापा हमारी मदद क्यों नहीं कर सकते? वो भी इस हालत में।" आशु ने थोड़ा गुस्सा होते हुए कहा। तुम इस हालत को लेकर इतना परेशान क्यों होते हो? ये हम सभी का तो होता है। और घर के काम तो औरतों का ही है।

हां मगर... मैं.. मैं तो औरत नहीं। उसने चौंकते हुए कहा

"हां, तभी तो औरत की पीड़ा नहीं समझते।" उधर से त तान्या अचानक बड़ी हो गई और बड़ी बड़ी आंखें दिखाते हुए बोली।

हां, फिर मुझे पीरियड क्यों? कैसे? वह चौंकता है।

तभी अलार्म की आवाज से उसकी नींद खुलती है। ओह अच्छा तो ये सपना था...सपने में मुझे पीरियड्स...शुक्र है भगवान का मैं लड़का हूं।

उसने राहत की सांस ली।

तो..क्या पीरियड्स इतना दर्द होता है!! उसने पलट कर बगल की बेड से दीदी को पेट पकड़े उतरते देखा।

रुको दीदी.. आशू ने रोका।

क्या हुआ? वह चौंकी

तुम बैठो। आज मैं चाय बना दूंगा और झाड़ू भी लगा दूंगा। और अगले 4 दिनों तक तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। कहते हुए वो तेजी से कमरे से बाहर निकला।...

लाल सपना | 11

चाँदनी समर । शिक्षिका । मध्य विद्यालय, दाऊद छपरा, मीनापुर, मुज़फ़्फ़रपुर

तान्या खड़ी सोच में पड़ गई
"क्या हो गया है कहीं कोई सपना तो नहीं देख लिया।" बाथरूम की तरफ बढ़ते हुए उसने सुना
रसोई में आशु चाय चढ़ाते हुए मां से कह रहा है
"मां जब घर हम सभी का है तो घर के काम भी तो उन सभी के हुए ना।"
मां हैरान हुई "तुझे क्या हो गया कोई सपना आया है क्या?"
"हां सपना ही तो आया था लाल सपना।"
आशु ने मुस्कुराते हुए कहा।

इस कहानी को वेबसाइट पर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)
द्वारा निर्गत ई-पत्रिका

हमसे जुड़ें-

ईमेल: writers.teachersofbihar@gmail.com

व्हाट्सएप चैनल : https://whatsapp.com/channel/0029Va9AFpl65yD3brB8Sl17

अपनी रचनाएँ भेजने हेतु गद्यगुंजन के वेबसाइट पर जाएँ।

https://gadyagunjan.teachersofbihar.org

वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

www.teachersofbihar.org